पार्श्व गायिका उषा तिमोथी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

पारुल शर्मा
शोधार्थी - पी.एच.डी (यू.जी.सी नेट)
संगीत एवं नृत्य विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र.
Email: sharmaparul21987@gmail.com

शोध सार

पार्श्व गायिका उषा तिमोथी एक साधारण व्यक्तित्व एवं हंसमुख मिजाज़ की गायिका हैं. जिन्होंने बहुत ही कम उम्र में गाना प्रारंभ कर दिया था. चित्रपट जगत में जब उनका प्रवेश हुआ तो उस समय बहुत सी लोकप्रिय गायिकाएं शमशाद, लता मंगेशकर,आशा भोंसले,सुमन कल्याणपुर आदि पहले से ही मौजूद थी और एक से एक मधुर एवं सुरीले गीत गाकर संगीत प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर रही थी उस समय को चित्रपट जगत का स्वर्ण युग कहा जाता हैं. 1970 के दशक में उषा तिमोथी ने चित्रपट जगत में पार्श्व गायिका के रूप में चित्रपट 'हिमालय की गोद में' कल्याणजी आनंदजी के संगीत निर्देशन में एक युगल गीत 'तू रात खड़ी थी छत पे' गाकर अपनी एक पहचान बनाई. यद्यपि उन्होंने उक्त गायिकाओं की अपेक्षा कम गीत गाने को मिले लेकिन जितने भी गीत गाएं उन्होंने उसे पूरी लगन और शिद्दत से गाया. उनके द्वारा गाएं गए गीत आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं जितने बीते दिनों में थे. जिनके सांगीतिक सफर में उनके परिवार के अलावा स्वर्ण युग के प्रसिद्ध पार्श्व गायक मोहम्मद रफ़ी एवं लोकप्रिय संगीत निर्देशक कल्याण - आनंदजी का बहुत बड़ा योगदान रहा. ये हिंदी एवं अन्य भाषाओं मारवाड़ी, राजस्थानी, भोजपुरी, मराठी, पंजाबी, मलयालम में अब तक लगभग पाँच हज़ार के करीब गीत गा चुकी हैं. आज तक संगीत के क्षेत्र में सक्रिय हैं. प्रस्तुत शोध-पत्र में उक्त पार्श्व गायिका के हिंदी चित्रपट के संगीतमय सफर एवं संघर्ष की यात्रा पर दृष्टिगोचर करते हुए प्रकाश डाला गया हैं. पार्श्व गायिका उषा तिमोथी ने चित्रपट जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाई और किन-किन कठिनाइयों का सामना किया, अपने प्रारंभिक सांगीतिक सफर में किन-किन कलाकारों का सहयोग रहा. यह बताने का प्रयास किया गया है जोकि इस शोध-पत्र का मूल उद्देश्य हैं.

उद्देश्य:- लोकप्रिय पार्श्व गायिका उषा तिमोथी का हिंदी चित्रपट संगीत में योगदान को जानना.
अनुसंधान विधि:- प्रस्तुत शोध पत्र में साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया हैं.
मुख्य शब्द:- उषा तिमोथी, मो.रफ़ी, आशा भोंसले, कल्याणजी - आनंदजी, कोरस, भारतीय सिनेमा एवं चित्रपट.

हिंदी सिनेमा की लोकप्रिय पार्श्व गायिका उषा तिमोथी का जन्म नागपुर, महाराष्ट्र के एक ईसाई परिवार में 8 अक्टूबर, 1947 को हुआ था. यह अपने ग्यारह भाई बहनों में सबसे छोटी थी. उनके बड़े भाई मधुसूदन तिमोथी

का संगीत के प्रति काफी झुकाव था और वे अक्सर घर पर संगीत सभाओं का आयोजन करते थे. संगीतमय वातावरण में ही ये पली-बढ़ी तो संगीत में रुचि होना स्वभाविक था. उस समय मनोरंजन के साधन भी फिल्म एवं रेडियो ही था . बिनाका गीतमाला नाम से रेडियो पर कार्यक्रम आता था जिसमें उस समय के लोकप्रिय गीत सुनाए जाते थे. उन्हीं गीतों को अक्सर ये सुना करती और गुन गुनाती थी. उनकी बड़ी बहन उन्हें बोल लिखकर याद करवाने में उनकी मदद करती. उनके पिता जो सीबीआई के लिए काम करते थे बहुत बड़े संगीत प्रेमी भी थे. अपने संगीत प्रेमी पिता की प्रेरणा व प्रोत्साहन से उन्होंने जयपुर के पंडित लक्ष्मण प्रसाद जी से तीन वर्ष की उम्र में ही शास्त्रीय संगीत की शिक्षा लेनी शुरू कर दी थी. इसके पश्चात उन्होंने निर्मला देवी जोकि अभिनेता गोविंदा की माताजी थी, से टप्पा और ठुमरी भी सीखा. तब उनकी उम्र महज नौ वर्ष की थी. उनके आखिरी गुरु पार्श्व गायक मोहम्मद रफी थे जिनसे उन्होंने संगीत की शिक्षा भी ली और साथ में बहुत से युगल गीत भी गाएं.

उषा तिमोथी की खोज संगीत निर्देशक कल्याण-आनंदजी ने की थी वर्ष 1956 -1957 में, एक संगीत समारोह ` कल्याणजी -आनंदजी नाईट ´ नाम से आयोजित किया गया था जिसमें उस समय के लगभग सभी प्रमुख पुरुष गायकों मोहम्मद रफी, मन्ना डे,हेमंत कुमार,मुकेश कुमार आदि ने संगीतकार कल्याण-आनंद जी द्वारा संगीतबद्ध गीतों का प्रदर्शन किया. कार्यक्रम का आयोजन उषा तिमोथी के पिता ने किया था. इस कार्यक्रम में प्रदर्शन करने के लिए पार्श्व गायिका सुमन कल्याणपुर जी को आमंत्रित किया गया था लेकिन किसी कारणवश वह इस कार्यक्रम में नहीं आ सकी, क्योंकि प्रदर्शन के लिए कोई महिला गायिका नहीं थी,तो मधुसूदन तिमोथी जो उनके बड़े भाई थे, ने कल्याण आनंद जी को उषा तिमोथी का नाम सुझाया. उस वक्त उनकी उम्र केवल आठ वर्ष की थी. उन्होंने दर्शकों के सामने चित्रपट ` चोरी- चोरी ´(1956) से लता मंगेशकर का एक गीत `रसिक बलमा´ का प्रदर्शन किया. जो राग शुद्ध कल्याण पर आधारित शंकर - जयकिशन की सुंदर रचना थी उनके प्रदर्शन ने दर्शकों के साथ-साथ कल्याण - आनंदजी को भी प्रभावित किया, उसके पश्चात उन्होंने उषा को अपनी मंडली का हिस्सा बनाया. कल्याण-आनंद जी उषा तिमोथी की प्रतिभा का पता लगाने वाले पहले व्यक्ति थे जिन्होंने उनके गायन से प्रभावित होकर उन्हें बॉलीवुड में एक प्रमुख पार्श्व गायिका बनाने का लक्ष्य रखा. जिनके लिए उन्होंने 70 के दशक में कई लोकप्रिय गीत गाए, इनके निर्देशन में उषा तिमोथी ने 100 से भी अधिक फिल्मों में गाया. उन्होंने अधिकांश युगल गीत पुरुष गायकों में मोहम्मद रफी के साथ और महिला गायिकाओं में बहुमुखी गायिका आशा भोंसले के साथ गाएं हैं. आशा भोंसले के साथ करीब 70-80 गीत गाएं. पार्श्व गायिका आशा भोंसले के बारे में उषा का कहना हैं कि उन्होंने मेरे लिए बहुत बड़ा दिल रखा वो मुझे अपनी बेटी की तरह मानती हैं उन्होंने मुझे अपने साथ बहुत से युगल गीत गाने का मौका दिया. इनके साथ गाया उनका एक गीत :-`मोहे बिकता सजन मिल जाए´(महुआ /1969) जो पंजाबी धुन पर आधारित सोनिक ओमी की सुंदर रचना हैं. उषा तिमोथी का पसंदीदा गीत हैं.

प्रसिद्ध गायिका उषा तिमोथी ने साक्षात्कार के दौरान बताया कि "हिंदी चित्रपट में पार्श्व गायिका के रूप में प्रवेश करने के लिए जब उनका ऑडिशन लिया गया तो उन्हें संगीत निर्देशक शिवराम ने फिल्म `दुर्गा पूजा ´(1962) के लिए संस्कृत के श्लोक पढ़कर सुनाने के लिए कहा. तो मैंने उस समय 64 लाइन संस्कृत की एक ही बार में पढ़कर सुना दी. उस समय मेरी उम्र 11 वर्ष की थी. इसका अंजाम यह हुआ कि पूरी इंडस्ट्री में यह बात फैल

गई कि एक छोटी सी लड़की ने बहुत बड़ा काम कर दिखाया है उनका कहना है कि दुर्गा पूजा फ़िल्म में उन्होंने गाया नहीं हैं एक तरह से वो मेरा एक टेस्ट था. इसके बाद मुझे फिल्मों में पार्श्व गायन करने के अवसर मिलने लगे.''

इसके पश्चात उषा तिमोथी ने `अखिल भारतीय गायन प्रतियोगिता' में भाग लिया. जिसमें उनका पहला नंबर आया था इस प्रतियोगिता का आयोजन दिल्ली में किया गया था. जिसमें जज की भूमिका निभा रहे थे पंडित बड़े गुलाम अली खान साहब . इस प्रतियोगिता में उन्हें भारत की सर्वश्रेष्ठ गायिका का अवार्ड मिला तथा सरकार की तरफ से दो लाख का चेक और मुंबई में एक फ्लैट मिला रहने के लिए अवार्ड के रूप में. जो एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी. महज 15 वर्ष की उम्र में उन्होंने ` सहगल स्मारक संगीत स्पर्धा ' में पहला स्थान प्राप्त किया. फिर इसके बाद आकाशवाणी की शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता में भी अव्वल स्थान पर रहीं. इस प्रकार उन्होंने बहुत सी गायन प्रतियोगिताओं में भाग लिया जिससे संगीत क्षेत्र में उनकी ख्याति ने फिल्मों में उनके लिए पार्श्व गायन के रास्ते साफ कर दिए. वर्ष 1964 में कल्याण - आनंद जी की फिल्म ` बिरजू उस्ताद ' में एक युगल गीत गायक ज़ानीबाबू कव्वाल के साथ ` हर एक पहलू में ' गाया उसके बाद इसी वर्ष संगीत निर्देशक सरदार मलिक ने अपनी फिल्म `महारानी पद्मिनी' में एक एकल गीत गाने का मौका दिया. गीत के बोल हैं-` रल मिल सखियों ने तन रंग दिया '. किंतु इन गीतों से उन्हें कोई विशेष सफलता नहीं मिल पाई.

उन्हें प्रसिद्धि मिली वर्ष 1965 में, संगीतकार कल्याणजी - आनंदजी के संगीत से सजी चित्रपट ` हिमालय की गोद में' से . इस चित्रपट में पार्श्व गायक मोहम्मद रफ़ी के साथ एक युगल गीत गाया था जो बहुत लोकप्रिय हुआ था गीत के बोल हैं -` तू रात खड़ी थी छत पे '. यह गीत अभिनेत्री शशि कला, माला सिन्हा और अभिनेता मनोज कुमार पर फिल्माया गया था. लोगों ने इसी गीत से पहली बार उषा तिमोथी को पहचाना. पार्श्व गायिका उषा तिमोथी ने बातचीत के दौरान बताया कि इस गीत की रिकॉर्डिंग शाम को 4:00 बजे शुरू हुई और सुबह 4:00 बजे तक चलती रही जब तक पूरा गीत अच्छे से रिकॉर्ड नहीं हो गया. इस गीत में मेरे और मोहम्मद रफ़ी के अलावा 10 लड़के और 10 लड़कियां कोरस में थे और 100-150 साज़िन्दे शामिल थे. तो सभी की कड़ी मेहनत होती थी पूरा एक टीम वर्क होता था तब जाकर गीत को अंजाम दिया जाता था.

उषा बचपन से ही मो.रफ़ी की बड़ी प्रशंसक थी एवं उनसे बहुत प्रेरित थी वह नए लोगों से रफ़ी की गायन शैली का पालन करने के लिए कहती थी. लता और रफ़ी के गीतों को सुनकर ही बढ़ी हुई थी. उन्होंने जब अपना पहला हिट ट्रैक ` तू रात खड़ी थी ' मो.रफ़ी के साथ रिकॉर्ड किया तो इस गीत की लोकप्रियता ने उन्हें एक सफल जोड़ी बना दिया . रफ़ी साहब के अतिरिक्त उन्होंने मुकेश, किशोर कुमार, शमशाद बेगम, सुमन कल्याणपुर, हेमलता, कृष्णा कल्ले,कमल बरोट सहित अन्य प्रमुख गायक गायिकाओं के साथ भी गाया हैं. शमशाद जी को याद करते हुए वे कहती हैं,`` कि उनका व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक एवं प्यार करने वाला था. वह मुझे अपने बच्चे की तरह मानती थी उनकी आवाज में वह खनक और खुलापन था जो मैंने किसी और गायिका में कभी नहीं देखा, वे बहुत दमदार गायिका थी. रिकॉर्डिंग के दौरान वह मुझे अक्सर कहती थी बेटा पूरी शक्ति के साथ गाओ और मैं हंसती थी, शमशाद जी आपके जैसी शक्ति तो किसी में नहीं हैं.'' उषा तिमोथि संगीत निर्देशक सी रामचंद्र के शो में भी प्रतिभागी थी. वे कहती हैं, " मैं नियमित रूप से उनके शो का हिस्सा हुआ करती थी वास्तव में,

गीतकार प्रदीप द्वारा लिखित प्रसिद्ध गीत,` ए मेरे वतन के लोगों ´ को शुरू में मेरे द्वारा सी रामचंद्र के साथ एक शो के लिए युगल गीत के रूप में गाया गया था. " गीता दत्त के बारे में उनका कहना है कि इनके साथ मैंने फिल्मों में नहीं गाया, साथ में काफी स्टेज शो जरूर किए हैं. लता मंगेशकर के साथ भी मेरा कोई युगल गीत नहीं हैं. मैं उनके साथ गाना चाहती थी लेकिन वो नहीं चाहती थी कि मैं उनके साथ गांउ. उनके चार - पांच गीतों में मैंने कोरस (सह गान)जरूर किया हैं. उदाहरण स्वरूप :- चित्रपट `सन ऑफ इंडिया´(1962) का एक गीत ` दिया ना बुझे री हमारा ´. लता जी के अतिरिक्त मैंने मो. रफी के द्वारा गाए गए गीतों में भी कोरस किया. जैसे - `मुझे जीने दो´ चित्रपट का एक गीत `अब कोई गुलशन ना उजड़े´(मों.रफ़ी) आदि.

कल्याणजी-आनंदजी के अलावा अन्य संगीत निर्देशकों जैसे बुलो. सी. रानी, रोशन, हंसराज बहल, एस.एन. त्रिपाठी, एस.मोहिंदर, सरदार मलिक, उषा खन्ना, सोनिक ओमी, बाबुल, लाला सत्तार और जगदीश खन्ना जैसे लोकप्रिय संगीतकारों के साथ भी मैंने काम किया है. सभी के साथ मेरा अनुभव अच्छा रहा. एस.मोहिंदर मेरे पसंदीदा निर्देशक रहे हैं. संगीत निर्देशक शंकर- जयकिशन के लिए उन्होंने फिल्मों में नहीं गाया लेकिन उनके शो की ये प्रमुख गायिका रही. संगीत निर्देशकों ने उनसे कई कव्वालियां भी गवांई हैं जो काफी मशहूर हुई हैं, मसलन -`आप बुलाएं और हम ना आएं´(चट्टान सिंह / 1974/ अजीज नाजा के साथ),` मोहब्बत भरा कोई पैगाम दें ´(हमराही/1974/मन्ना डे, महेंद्र कपूर के साथ) और `दिल वालों से प्यार कर लो´(ज़ोरो/1975/ आशा,रफ़ी के साथ). तीनों ही कव्वालियां कल्याण- आनंद जी के निर्देशन में गायी हैं. उनके गायन की अन्य फिल्में रहीं - कीर्ति अनुराग की संगीतबद्ध `सोने का पिंजरा´(1986) जिसमें उन्होंने चेतना राव के साथ एक युगल गीत `कितना वंडरफुल है इवनिंग´ गाया और श्रीकांत निवासकर के संगीत से सजी `आखिरी चेतावनी´(1993) जिसमें उन्होंने उदित नारायण के साथ एक रोमांटिक गीत `तेरी मोहब्बत ने मुझको किया´ गाया.

उषा तिमोथी ने अपने हिंदी चित्रपट के संगीतिक सफर में हजारों गीत गाए लेकिन यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि उनके द्वारा गाए गए अधिकतर गीत उनकी आवाज में नहीं रहे, काट दिए जाते थे तथा किसी और दूसरी गायिका के द्वारा गवां लिए जाते थे उदाहरण के तौर पर चित्रपट `कालीचरण´ (1976) का एक गीत `जा रे जा ओ हरजाई ´ गीत पहले उनकी आवाज में रिकॉर्ड किया गया था लेकिन बाद में लता मंगेशकर ने गीत को गाया इसके पश्चात `प्रोफेसर प्यारेलाल´ (1981) का गीत `तेरे सिवा ना किसी का बनूंगा यह वादा रहा´ पहले उन्होंने गाया लेकिन बाद में उनकी आवाज में नहीं रहा. मुकद्दर का सिकंदर (1978) इस फ़िल्म में भी उनका गाया एक गीत नहीं रहा. इस तरह से बहुत सारे गीत जो मेरी वॉइस में रिकॉर्ड हुए लेकिन बाद में मेरी आवाज में नहीं रहे. तो दिल बहुत दुखता था इस वजह से मैं थोड़ा डिप्रेशन में भी आ गई थी. इस प्रकार फिल्मों में चलती राजनीति ने उन्हें आगे बढ़ने नहीं दिया. उसी दौरान मो.रफी का भी देहांत हो गया था. जिन्हें मैं अपना पिता और गुरु दोनों मानती थी उनका मुझे काफी सपोर्ट भी था इनके जाने का मुझे बहुत सदमा लगा. इसी दौरान मुझे `एक शाम रफ़ी के नाम´ नामक शो में गाने के लिए कहा गया, लेकिन मैंने गाने से इंकार कर दिया कहा - कि इस शो में सभी गीत रफी साहब के ही गानें होंगे कहीं ऐसा ना हो मैं गीत गाते-गाते बीच में ही भावुक ना हो जाऊं,तो आपका शो खराब हो सकता हैं . तो उस समय मैंने रफी साहब के नाम से जो शो होते थे उनमें जाना बंद कर दिया था, लेकिन यह बात गलत तरीके से इंडस्ट्री में फैल गई कि मैंने फिल्मों के लिए गाना बंद कर दिया जबकि ऐसा कुछ भी नहीं था.

इस तरह से मेरी रिकॉर्डिंग पर भी असर पड़ने लगा. तो उस समय मुझे सब के पास जाकर, मिलकर यह बोलना पड़ा कि मैंने फिल्मों में गाना नहीं छोड़ा हैं मैं सिर्फ अभी रफ़ी साहब की नाईटस में गीत नहीं गा रही हूँ. उनका कहना है कि मुझे जितना काम मिलना चाहिए था उतना मिला नहीं. मुझे एकल गीत गाने के अवसर बहुत कम मिले, ज्यादातर मेरे हिस्से युगल और समूह गीत ही आते थे.

इस प्रकार उन्होंने अपने हिंदी फिल्मों के पार्श्व गायन के सफर में बहुत से रोमांटिक, मौज-मस्ती, हास्य, उदासी से भरे, कव्वाली, शास्त्रीय, उपशास्त्रीय हर प्रकार के गीत गाए हैं और खूब प्रशंसा बटोरी है. लेकिन आइटम सॉन्ग केवल एक ही गाया हैं जिसके बोल हैं-`होनो लू लू से आई हूं मैं ´(खंजर / नितिन मंगेश). वर्तमान में भी ये संगीत के क्षेत्र में सक्रिय हैं. अभी हाल ही में ये एक हिंदी चित्रपट के लिए तीन (लोरी, अरदास और रोमांटिक) गीत रिकॉर्ड कर रही हैं. इनके पति का नौ साल पहले देहांत हो चुका है. जो एक डिप्टी कमिश्नर थे. आजकल ये अपने बेटा, बहू और 6 साल के पोते के साथ मुंबई में रह रही हैं और अपने परिवार के साथ बहुत खुश हैं,अच्छा जीवन व्यतीत कर रही हैं. उनकी एक बेटी भी है जो अमेरिका में रहती हैं, बहुत अच्छी आर्टिस्ट हैं, एक्टिंग करती हैं. वे भी अपने परिवार में खुश हैं और ये स्वयं हिंदी फिल्मों एवं एल्बम्स के लिए गा रही हैं उनका खुद का एक बैंड है जिनके साथ यह देश विदेश में आज भी शो कर रही हैं. अपने शो में ये आजकल के गीतों की अपेक्षा पुराने गीत ही गाती हैं क्योंकि श्रोता वही सुनना पसंद करते हैं जिनमें से अधिकतर गीत लता, आशा, मो.रफी एवं स्वयं के गाएं हुए होते हैं. संगीत प्रेमियों को वही लुभाते हैं. ये 74 वर्ष की हो चुकी हैं उनकी आवाज आज भी उतनी ही सुरीली है उसमें श्रोताओं को मोहित करने वाला जादू अभी भी कायम हैं. उषा तिमोथी के द्वारा गाएं गए कुछ प्रमुख गीत इस प्रकार है :-

1. `तकदीर ने क्या अंगड़ाई ली´ (मन्ना डे,मोहम्मद रफ़ी और सुमन कल्याणपुर के साथ/सुनहरे कदम /1966/बुलो. सी. रानी) .
2. `जब - जब बहार आई´(उषा मंगेशकर, महेंद्र कपूर के साथ / तकदीर/1967/ लक्ष्मीकांत - प्यारेलाल).
3. `लंदन पेरिस घूम कर देखो´(मुकेश कुमार के साथ/ परिवार/1968/ कल्याणजी - आनंदजी).
4. `होठों पर इनके थोड़ा - थोड़ा´(मों. रफ़ी के साथ/ रात के अंधेरे में/1969/ प्रेम धवन) .
5. `ऐ सपनों के राजा´(शमशाद, कमल बारोट,उषा खन्ना के साथ/ नतीजा /1969/ उषा खन्ना).
6. `जो मामा मेरा आ जाएगा´(एस.बलबीर, कृष्णा कल्ले, हेमलता के साथ/ हीर रांझा /1970/ मदन मोहन) .
7. `मैं हूं सामने तू मेरे सामने´ (कांच और हीरा/1972/ रविंद्र जैन).
8. `अरे रफ्ता-रफ्ता देखो आंख मेरी लड़ी है´(किशोर कुमार के साथ/ कहानी किस्मत की/1973/ कल्याणजी - आनंदजी).
9. `हो बैरी सैयां की नजरिया´(कंचन के साथ/ उलझन /1975/ कल्याणजी-आनंदजी).
10. `काली - काली जुल्फों में´(अनुराधा पोड़वाल के साथ/फरिश्ता या कातील/1977/कल्याणजी- आनंदजी) .
11. `होनो लू लू से आई हूं मैं´(खंजर /1979/ नितिन मंगेश)
12. `मेरी ज़ान तुमसे मोहब्बत है´(मों. रफ़ी के साथ/ मेरा सलाम/1980/ राजकमल).
13. `जा पोरी जा´(मोहम्मद अज़ीज़ के साथ/ रहम दिल जल्लाद/1985/ अजय स्वामी).

आजकल की गायकी और नई गायकी के बारे में बातचीत करते हुए पार्श्व गायिका उषा तिमोथी का कहना है कि पहले के गीत अर्थ पूर्ण होते थे लेकिन आज के गीतों में वो बात नहीं रही. आज तो ऐसी गायकी का चलन अधिक बढ़ गया है जिसमें शोर-शराबे के अलावा और कुछ नहीं होता, गीत के बोल भी स्पष्ट सुनाई नहीं देते और ऐसे गीत ज्यादा दिनों तक श्रोताओं को लुभाते भी नहीं हैं. पुराने गायक कड़ी मेहनत करते थे जबकि आजकल के गायक शॉर्टकट से काम चलाना चाहते हैं. जिसके चलते गायकी के स्तर में दिन-प्रतिदिन गिरावट आ रही है उनका कहना हैं कि शास्त्रीय संगीत के जरिए ही अच्छे गीत गाएं जा सकते हैं.

अंततः प्रस्तुत शोध प्रपत्र के अध्ययन से हमें ज्ञात होता हैं उषा तिमोथी अपने समय में बड़ी ही होनहार पार्श्व गायिका रही हैं लेकिन उन्हें अन्य गायिकाओं शमशाद बेगम, लता,आशा, सुमन कल्याणपुर की अपेक्षा गाने के अवसर बहुत कम मिले. बेशर्ते युग परिस्थिति के हिसाब से अगर इन्हें और मौका दिया जाता तो निसंदेह ही ये और भी अच्छा कर सकने की संभावना इनमें मौजूद थी और आज तक बरकरार हैं.

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. उषा तिमोथी, जूम मीटिंग एवं दूरभाष से लिए गए साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी दिनांक: 24.04.2022 के आधार पर संकलित.

2. भार्गव, अनिल. *स्वरों की यात्रा (हिंदी फिल्म गायकी का सफर)1931-2010*: वाढ़मय प्रकाशन, जयपुर, प्र. सं. 2014, (पृ. 312).

3. वही, (पृ.312)